कृषि उपयोगी पुस्तक माला-संख्या ६

सोंठ व हल्दी

लेखक—

गयादत्त त्रिपाठी बी० ए०

कृषि उपयोगी पुस्तक माला—संख्या ९

सोंठ व हल्दी

लेखक

गयादत्त त्रिपाठी, बी. ए.

प्रकाशक

कृष्ण कान्त त्रिपाठी,

मनेजर कृषि भवन (प्रयाग) इलाहाबाद।

प्रथम बार १००० प्रति] सन् १९३९ ई० [मूल्य दो आना

मुद्रक—संगमलाल जायसवाल, जायसवाल प्रेस कीटगंज प्रयाग ।

प्रस्तावना

इन दिनों ग्राम सुधार के सम्बन्ध में लोगों का ध्यान वृक्षारोपण अर्थात् बागवानी की ओर विशेष रूप से आकर्षित किया जा रहा है—कहा जाता है और वास्तव में यह सच भी है कि व्यापारिक दृष्टि से गेहूँ, जव, चना, मटर आदि की खेती के अपेक्षा फलों की खेती से किसानों को अधिक लाभ हो सकता है। दूसरे यह कि यदि ग्रामों में बगीचे अधिक लग जावेंगे तो ग्राम वासियों को भी फल भोजन के लिये प्राप्त हो सकेंगे। फलाहार से स्वास्थ्य सुधर जावेगा। यही कारण है कि हमारे शास्त्रों में व पुराणों में फल आहार की बहुत महिमा गाई गई है—आधुनिक तत्ववेत्ता लोग भी फल भोजन की नित्य प्रशंसा करते हैं—हाल ही में अमेरिका के एक प्रसिद्ध डाक्टर ने फल भोजन के सम्बन्ध अपना अनुभव इस प्रकार प्रकट किया है "Fruit diet had made me young again" यानी फलाहार ने मुझे फिर जवान बना दिया है। इतनी लाभ दायक होने पर भी दिहातों में बागवानी का काम कम होता है अर्थात् फलों के बगीचे कम लगाये जाते हैं। उसके कई कारण हैं :—

एक तो कानूनी अड़चन—संयुक्त प्रान्त में कानून लगान में कुछ ऐसी धारायें हैं जिनके कारण किसानों को बगीचा

लगाने में ज़मादारों से अधिक भय है। इस भय को दूर करने के लिये कानून में कुछ परिवर्त्तन की आवश्यकता है।

दूसरी अड़चन धन के संकोच की है। अन्न की खेती करने वालों को फ़सल तीन ही चार महीने में मिल जाती है। जिससे यद्यपि लाभ थोड़ा होता है पर फल जल्दी मिल जाता है इसके विरुद्ध फलों की खेती करने वालों को लाभ के लिये कम से कम चार, पाँच वर्ष प्रतीक्षा करनी पड़ती है। यह ऐसी अड़चन है जिसको साधारण किसान बरदास्त नहीं कर सकता। क्योंकि पेट भरने के सिवाय हर छठे महीने लगान का तकाज़ा सिर पर खड़ा रहता है। इस अड़चन को दूर करने के लिये भी कानून लगान में कुछ परिवर्त्तन सम्भव है परन्तु एक साधारण उपाय यह है कि बाग लगाने वाले उन खेतों में जिसमें बाग लगावें कुछ ऐसी जिन्स पैदा करें जिससे वृक्षों के बाढ़ में सहायता मिले और कुछ आमदनी भी होती रहे। वृक्षों की छाया में पैदा होने वाली बहुत सी जिन्स है पर उनमें से दो प्रसिद्ध अर्थात् सोंठ और हल्दी की खेती का वर्णन इस छोटी सी पुस्तक में किया जाता है। आशा है कि ज़मीदार तथा किसान जो बगीचा लगाना चाहते हैं इससे लाभ उठायेंगे।

सोंठ की खेती

सोंठ अदरख से बनती है। ऐसा कौन होगा जो यह नहीं जानता कि अदरख मनुष्य के लिये कितनी लाभकारी वस्तु है। यह दवाइयों के उपयोग में भी बहुत आती है। यह मनुष्य को अधिक लाभदायक वस्तु है। इसलिये मनुष्यों को चाहिये कि वे इसकी खेती पर विशेष ध्यान देवें। ये एक ऐसी फ़सल है जो वृक्षों की छाया में अच्छी तरह होती है। बहुधा देखा गया है कि खेती के चारों तरफ झाड़ वगैरह लगाये जाते हैं और इसके आस पास की ज़मीन बिलकुल बेकार रहती है। इस ज़मीन को अदरख इत्यादि की फ़सल लगाने के उपयोग में लाना चाहिये। इसी तरह से बगीचों में कई प्रकार के फलों के वृक्ष लगे रहते हैं। इनके आस पास की ज़मीन व्यर्थ पड़ी रहती है। ऐसी भूमि में अदरख लगाना उपयोगी है। परन्तु यह बात ध्यान में रखना चाहिये कि इसके लिये छाया की विशेष आवश्यकता है। यह फसल छाया में ही पैदा हो सकती है। आम, रसवरी इत्यादि के पेड़ ऐसे ही होते हैं कि यदि उनके नीचे की ज़मीन में कोई फ़सल लगी हो, तो उनको खुद ही अधिक लाभ होता है। इसलिये सोंठ यानी अदरख की फ़सल को बगीचे में वृक्षों के नीचे लगाना अधिक उपयोगी होगा।

इससे फलों के वृक्षों को लाभ होगा। अदरख की फ़सल अच्छी होगी, ज़मीन बेकार नहीं रहेगी और उसके लिये छाया वगैरह का अलग से प्रबन्ध न करना होगा। बगीचे के तय्यार होते समय तक अधिक लाभ भी होता रहेगा।

जमीनः—

कड़ी काली मिट्टी किसी जड़ वाली फ़सल के लिये ठीक नहीं होती है। अदरख भी एक जड़ वाली फ़सल है इसलिये यह भी ऐसी मिट्टी में पैदा नहीं हो सकती, क्योंकि ऐसी मिट्टी में उनकी जड़ें अच्छी तरह बढ़ने नहीं पाती। यह फ़सल और किसी प्रकार की मिट्टी में जो अधिक पथरीलो न हो, ऊग सकती है। यह रेतीली मिट्टी में सफलता के साथ लगाई जाती है और पैदावार भी अच्छी होती है। पानी जमा रहने वाले खेत में यह फ़सल अच्छी नहीं हो सकती, क्योंकि पानी रहने से इसकी जड़ सड़ जाती है और फ़सल खराब हो जाती है। दूसरी बात यह है कि जब पानी खुल जाता है तो उसमें ऊपर एक तह तक मिट्टी कड़ी हो जाती है जिससे इसकी जड़ें बढ़ने नहीं पाती और बिलकुल पतली पड़ जाती है और परिणाम यह होता है कि फ़सल खराब हो जाती है और पैदाबार में कमी हो जाती है। इसकी फसल के लिये मिट्टी हल्की और रेतीली और खाद्य वस्तु से परिपूर्ण होनी चाहिये जमीन में जो पानो वर्षा रह दिया जाय वह इसमें जमा न होकर साफ छनकर निकल जाय।

इस प्रकार के खेत में चाहे मिट्टी काली हो या रेतीली हो अदरख की फ़सल अच्छी तरह हो सकती है।

ज़मीन की तैयारी

जब अदरख़ की फ़सल झाड़ों और वृक्षों के नीचे लगाई जाती है तो उसके लिये खास तौर पर कोई जुताई वग़ैरह की आवश्यकता नहीं होती। बगीचों में झाड़ों और वृक्षों के नीचे और उनके पास तो तुम्हें जोतना और बखरना ही पड़ेगा क्योंकि बिना भली भांति जोताई, सिंचाई व गोड़ाई के बगीचों से अच्छे फल की आशा नहीं की जा सकती और बगीचों में सोंठ (अदरख) लगाने से एक पन्थ दो कार्य्य सिद्ध होता है—वही जुताई जो बगीचे की सुधार के लिये करना पड़ता है उसीमें दूसरी फ़सल का मतलब सिद्ध होता है—यह कह चुके हैं कि सोंठ (अदरख) छायादार ज़मीन में होती है। बग़ीचों में वृक्षों की छाया इसको स्वाभाविक मिलती है झाड़ों और पेड़ों की छाया ही उनके लिये काफ़ी है। यदि अदरख की फ़सल झाड़ों के नीचे नहीं लगाना हो और उसे खुले खेत में लागाना है तो फिर उसके लिये जुताई और बखराई की अधिक आवश्यकता पड़ती है।

जिस जमीन में अदरख की फ़सल उगाना होगा उसे अक्टूबर या नवम्बर के महीने में बर्षात खतम होने पर हल से अच्छी तरह जोतना चाहिये क्योंकि उस समय ज़मीन जोतने

के लिये अच्छी हालत में रहती है।। इस समय एक बार सीधा और एक बार आड़ी जोतना चाहिये। यह जोताई ठंडकाल के लिये बस होगी। जोतने के बाद ढेलों को फोड़ने के लिये खेत में पहटा देना चाहिये। अप्रैल या मई में जब कि पानी का एक झला आ गया हो, उसके बाद गरमी की ऋतु में फिर से एक बार सीधा और एक बार आड़ा हल से अदरख के खेत को जोतना चाहिये। खेत को समथर कर देने से मिट्टी बिलकुल अच्छी हो जाती है और फ़सल लगाने के लायक हो जाती है।

जब इस तरह मिट्टी कमाई जा चुके तो फिर उसके ऊपर खेत में बांस गाड़कर छाया के लिये छप्पर बनवा देना चाहिये, क्योंकि यदि छाया नहीं होगी तो यह फ़सल अच्छी नहीं होगी। इसके बाद क्यारियां बनाना चाहिये यदि क्यरियां नहीं पसंद है तो फिर पारियां और बंधियां बनवाना ठीक होगा। आमतौर से यह फ़सल वैसे ही खेत में लगा देने से भी हो जाती है, परन्तु उसमें सिंचाई की असुविधा रहती है।

बीज की बोनी:—

अप्रैल या मई के महीने में बीज बोने के पहिले सोंठ (अदरख) के बीज को किसी ठंढी जगह दालान या कोठरी में कुछ नम पुवाल या हरीघास के नीचे रख देने से उसमें कल्ले या जड़ें निकल आवेंगी इन जड़ों को बंबरा भी कहते हैं अंग्रेज़ी में इसे Bulb कहते हैं। अदरख एक जड़ वाली फ़सल है और

खेत में इसकी जड़ लगाई जाती है। जड़ों (Bulb) को मिट्टी में गाड़ देने से अदरख का पौधा निकलता है। अदरख की इन जड़ों को एक लाइन में ९ इंच दूरी पर और हर एक लाइन को एक दूसरे से २५-३० इंच की दूरी पर लगाना चाहिये। एक एकड़ ज़मीन के लिये करीब दो मन अदरख के बीज की आवश्यकता पड़ती है। जब पौधे निकल आवें और वर्षा ऋतु का आगमन हो तो फिर पौधों के चारों तरफ आस पास मिट्टी चढ़ाना चाहिये। इससे यह लाभ होगा कि वर्षा का पानी पौधे के पास जमा न होने पावेगा, जिससे उसे कोई हानि नहीं होगी।

सोंठ अर्थात् अदरख की फ़सल के लिये खाद्य की कोई विशेष आवश्यकता नहीं है, परन्तु खली गोबर और राख की खाद अदरख की फ़सल के लिये अधिक लाभदायक होती है। कृषि उपयोगी पुस्तक माला की पहिली संख्या-खाद और उनका व्यवहार पुस्तक में तरह तरह की खाद का उपयोग बतलाया गया है उनमें से जो सुलभ हों उसी खाद का उपयोग करना लाभदायक होगा। खाद्य फ़सल लगाने के बाद और मिट्टी चढ़ाने के पहिले देना उचित है। दो बार निंदाई की अधिक आवश्यकता है। एक जुलाई में और फिर दूसरी सितम्बर में करना उचित है। यदि फ़सल लगाने के समय पानी नहीं बरसता है तो फ़सल की बराबर सिंचाई करते रहना चाहिये नहीं तो पौधे कुम्हला जायंगे और कोई सूख भी जायंगे जिससे फ़सल नष्ट होजायगी और पैदावारी कम होगी। इसकी सिंचाई पर बराबर ध्यान

रखना चाहिये। बरसात आने पर फिर सिचाई की कोई विशेष आवश्यकता नहीं है। बरसात समाप्त होने के बाद सिंचाई की फिर आवश्यकता पड़ती है। जिस समय फ़सल को पानी की आवश्यकता हो उसी समय बराबर सिंचाई करना चाहिये।

हमने पहिले लिखा है कि जुलाई और सितम्बर के महीने में दो निंदाई गुड़ाई की विशेष आवश्यकता है इसके सिवा बरसात जब अधिक दिन के लिये रुक जाय उस समय अदरख के खेत में यदि कूड़ा कचरा अधिक बढ़ गया हो तो निंदाई और गुड़ाई दोनों करना बहुत उपयोगी होता है। लिखने का सारांश यह है कि जब जब सिचाई व निंदाई गुड़ाई की ज़रूरत जान पड़े तब तब उस ज़रूरत को पूरा करना चाहिये। इस से फ़सल को किसी प्रकार की हानि नहीं होती। लाभ जितना चाहे अधिक हो जाय।

बरसात के दिनों में एक बात का विशेष ध्यान देना चाहिये कि पानी पौधों की जड़ों के पास ज़्यादा तादाद में जमा न रहने पावै जिससे कि वह जड़ों को किसी भी प्रकार नुकसान न पहुँचा सके। इसके लिये पौधों की चढ़ी हुई मिट्टी यदि गिर जावे तो फिर से उसे चढ़ा देना चाहिये और पौधों को सुरक्षित रखना चाहिये। इसी अवस्था में बीज वाली अदरख खोदकर निकाल ली जाती है।

अदरख की खुदाई :—

जब पौधों के पत्ते सूखने लगें तो समझ लेना चाहिये कि

अब फ़सल बिलकुल तैयार हो गई है और उसे खुदवाना चाहिये। यह फ़सल दिसम्बर और जनवरी के महीने में तैयार हो जाती है। इसी समय इसे निकलवा लेना चाहिये। छोटी छोटी जड़ों को बीज के लिये अलग रख लेना चाहिये और बोने के समय तक उन्हें गीली घास के ढेर के नीचे रखना चाहिये। एक अच्छी पैदावार होने से फी एकड़ सौ या सवा सौ मन तक अदरख निकलती है अदरख गीली हालत में ३ या ४ रुपया मन के भाव से बिकती है और सूखने पर उससे सोंठ तयार होती है जो १० रुपया मन तक बिकती है।

अदरख से सोंठ तय्यार करने की विधिः—

खेत से अदरख को खोद कर साफ पानी में अच्छी तरह धोकर कड़ी धूप में सुखाने से पांच सात दिन में सोंठ तय्यार होगी परन्तु यदि बहुत अच्छी सोंठ तय्यार करना हो जो बाजार में अधिक मूल्य में बिक सके तो यह आवश्यक है कि धोने के बाद अदरख को छुरी से साफ कर लेंय अथवा टाट या बोरा में रगड़ लेवें जिससे उसके ऊपर का छिलका अलग हो जावे और सफेदी निकल आवे—इसके बाद एक वार पानी में फिर से धोकर किसी साफ सुथरी जगह में कपड़ा बिछा कर धूप में सुखावें-संध्या समय के बाद उसे ओस से बचाने के लिये हटा कर रख लेवें इस प्रकार कई दिन तक किया करने से कागज़

की भांति सफेद रंग की सोंठ तय्यार होगी जो बाज़ार में अच्छे भाव से बिक सकेगी।

सोंठ अर्थात् अदरख की खेती की लागत एक एकड़ ज़मीन में लगभग पचास रुपये के होगी जिसमें मुख्य खर्च लगभग १०) दस रुपया बीज का दाम और यदि खली की खाद देनी हो तो वही दस रुपया खाद की कीमत और तीस रुपये में मज़दूरी जुताई सिंचाई तथा लगान समझना चाहिये। इतना खर्च करने पर १५० रुपये की अदरख वा सोंठ अवश्य होना चाहिये और ऐसा होने पर एक एकड़ में १००) रुपया की बचत होने की पूरी सम्भावना है।

हल्दी—हरिद्रा

दूसरी फ़सल जो बगीचों में लगाई जा सकती है वह हल्दी है। परन्तु इसके विषय में यह नहीं कहा जा सकता कि यह छाया में ही होने वाली फ़सल है। हल्दी खुली भूमि में और छायादार भूमि में भी होती है। छयादार जगह में पैदा हुई हल्दी के अपेक्षा खुली जगह में की हल्दी अच्छी समझी जाती है क्योंकि खुली भूमि की हल्दी का रंग अच्छा होता है और बाज़ार में अच्छा दाम उठता है। हल्दी के लिये उचास पर दोमट ज़मीन अच्छी होती है। हल्दी की खेती की सब क्रिया प्रायः अदरख की खेती के समान है। समय भी वही अनुकूल है जो अदरख के लिये अनुकूल समझा गया है। बीज के लिये भी अदरख के तरह हल्दी के दो दो इञ्च के टुकड़ा करके १०-१५

दिन तक किसी ठण्डे अंधेरी जगह में रखने से जब पत्तियां निकल आवें तब खेत में बैठाना चाहिये साधारण तौर पर एकड़ ज़मीन के लिये तीनमन बीज की ज़रूरत पड़ती है परन्तु यदि ऋतु के आरम्भ में बीजारोपण किया जावे तो बीज कम लगता है—इसी प्रकार यदि भूमि भारी है तो बीज कम डालना चाहिये और यदि खुली हुई तथा नर्म हो तो अधिक बीज लगता है जिस प्रकार पौधों के सूखने पर अदरख खोदी जाती है उसी प्रकार जब हल्दी के पौधे मरने लगते हैं तब मालुम हो जाता है कि फ़सल तयार है और हल्दी खोद ली जाती है ।

खोदने का काम मामूली कुदारी से लिया जाता है। खेत से हल्दी निकालने के बाद पांच सात दिन तक धूप में सुखाई जाती है और उसके उपरान्त मट्टी के बरतन में पानी के साथ उबाली जाती है अच्छी आग होने से आध घंटे की आंच काफ़ी होती है फिर उतार कर एक बार साफ पानी में धोकर सुखा लेने से अच्छी हल्दी, (हरदी) तय्यार हो जाती है। उबालने के समय पानी में कुछ गोबर मिला देने से हल्दी में कीड़े नहीं लगते। जैसा कि सोंठ के लिये अनुमान किया गया है वैसा ही हल्दी का भी अनुमान है कि एक एकड़ भूमि से १०० रुपया तक की बचत हो सकती है ।

बीज के लिये जो हल्दी रक्खी जाती है उसे पानी में उबालना नहीं चाहिये। उसकी रक्षा की बहुत ही आवश्यकता होती

है जब हल्दी खेत से खोदी जावै तो बीज के लिये सब से पहिले बड़ी बड़ी गांठे उत्तम हवादार स्थान में अथवा गीली रेत रक्खी जाय। जिससे बीज़ को सूखने का डर न रहै—सूखने को बचाने के लिये गाठों की ढेर को हल्दी के पत्ते या पुवार से ही ढंक देना चाहिये। जो गांठें बीज के काम मे आती है वे कुछ गोलाई लिये हुये पौदे के निचले भाग में लगी हुई होती है यह देखने में कठोर मालुम होती है और इधर उधर कई डालिया निकली हुई होती है तथा उनकी जड़े तंतुवाली होती है और रग में कुछ भूरा पन रहता है।

हलदी के विवय की कुछ विशेष शूचनायें—

हल्दी भारथ वर्ष की वस्तु है किसी अन्य देश से यहाँ नहीं लायी गयी—इसको संस्कृत में हरिद्रा और हिन्दी में हरदी कहते है अंगरेज़ी नाम (Termeric) टरमेरिक है। मैसूर आदि कई प्रान्तों में हल्दी का पौदा जंगली अवस्था में पाया जाता है हिन्दुस्तान में इसका उपयोग भी वहुत है कोई घर ऐसा न होगा जिसमें हल्दी न खाई जाती हो इसका उपयोग दाल में, कढ़ी में तथा आचार प्रगति में अधिकता मे होता है इसका विशेष कारण यह है कि उदर के लिये हल्दी बहुत हा लाभदायक समझी गइ है—चर्म्म रोग को भी हल्दी दूर करती है इसी कारण सरसों के उवटन के साथ हल्दी पीस करके मिला लेते हैं इस प्रकार अत्यन्त उपकारी

वस्तु होने के सबब से हल्दी का उपयोग विवाह आदि शुभ कामों में भी किया जाता है व्यापारिक दृष्टि से भी हल्दी बड़े लाभ की वस्तु है इससे कई प्रकार के रंग तय्यार किये जाते हैं—लाल, पीला, नीला, हरा सभी प्रकार के रंग इससे बनते हैं—इसके अतिरिक्त लकड़ी पर रंग (बारनिस) चढ़ाने के काम में भी हल्दी का प्रयोग होता है इन्हीं सब उपयोगिता के कारण हल्दी हिन्दुस्तान से बाहर को बहुत ज्यादा भेजी जाती है इसका व्यापार विदेशों से साल में २० लाख रुपये के लगभग का होता है।

हल्दी हरएक प्रकार की जल वायु में पैदा होती है और भारतवर्ष के सब प्रान्तों में इसकी खेती होती है—सरकारी रिपोर्ट को देखने से मालुम होता है कि करीब ६० हज़ार एकड़ ज़मीन में हल्दी बोई जाती है जैसे सोंठ का बीज नहीं होता वैसे ही हल्दी का भी बीज नहीं होता—बोने के लिये इसको गाठें काम में लाई जाती हैं—बोने पर यह गांठे स्वयम् बड़ी हो जाती है और उनसे नई नई गाठें पैदा हो जाती हैं हल्दी खोदने के समय पुरानी गाठें अलग कर ली जाती है ये गाठें रंग बनाने के लिये अच्छी समझी जाती हैं—ये गाठें संख्या में बहुत कम होती है और स्वाद भी अच्छा नहीं होता कुछ गांठे श्याम वर्ण की होती है उनमे सुगन्धि नही होती ऐसी गाठें भी छाँट कर अलग करली जाती है और उबाली नहीं जाती उबालने के लिये लम्बी लम्बी ललाई लिये हुये भूरी

तथा चमत्कार वाली गाठों को चुनना चाहिये जो गाठें उबालने के लिये अलग की जाती है वे कई श्रेणी की होती है जिससे कि बाज़ार में हल्दी का दाम अच्छा मिलने की आशा से चतुर किसान पृथक पृथक श्रेणी की गाँठ को अलग अलग उबालते हैं और लाभ उठाते हैं ।

॥ इति ॥

विशेष सूचना

प्रयाग के प्रसिद्ध अमरूद के जखीरे
हमारे यहां चुने हुये अच्छे बीजों
से तय्यार किये जाते हैं। दामों
में भी विशेष सुभीता है :—

कृषि भवन-प्रयाग

कृषि उपयोगी पुस्तक माला

संख्या १—खाद और उनका व्यवहार—लेखक पण्डित गयादत्त त्रिपाठी बी० ए० (दूसरी बार) मूल्य ।)

" २—लाख की खेती—लेखक पण्डित गयादत्त त्रिपाठी बी० ए० (दूसरी बार) मूल्य ।)

" ३—धान की खेती—लेखक ठाकुर रामनरेश सिंह (दूसरी बार) मूल्य ।)

" ४—नीबू नारंगी—लेखक पण्डित गंगा शंकर पचौली (दूसरी बार) मूल्य =)

" ५—मूंगफली की खेती—लेखक पण्डित गयादत्त त्रिपाठी बी० ए० (दूसरी बार) मूल्य -)

" ६—कपास की खेती—लेखक पण्डित गंगाशङ्कर पचौली (दूसरी बार) मूल्य ॥)

" ७—खेती पौड़ा गन्ना ऊख—लेखक ठाकुर रामनरेश सिंह मूल्य ॥)

" ८—कृषि सिद्धान्त—प्रकाशक कृषि भवन-प्रयाग मूल्य ।-)

" ९—सोंठ व हल्दी—ले० पं० गयादत्त त्रिपाठी बी० ए० मूल्य =)

" १०—सोयाबीन—ले० पण्डित गयादत्त त्रिपाठी बी० ए० मूल्य ≡)

कृषि भवन-प्रयाग